ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

सांस्कृतिक मूल्यों के पुनरुत्थान का काव्य : आधुनिक हिन्दी राम काव्य

–डॉ. राजेन्द्र कुमार सिंघवी
व्याख्याता–हिन्दी
महाराणा प्रताप राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
चित्तौड़गढ़ (राज.)
E-mail- drrajendrakumarsinghvi@gmail.com
Mob.- 9828608270

भारतीय संस्कृति के शाष्वत तत्त्व वस्तुतः मानवता के पोषक तत्त्व हैं। अद्वेषभाव, आत्मोपम्य दृष्टि, करुणा, मुदिता, मैत्री में तत्त्व हमें भारतीय संस्कृति की ओर ले जाते हैं, दूसरों के साथ उदारता से हम अपनी ही संस्कृति का पोषण करते हैं । भारतीय संस्कृति के मूल आधारों में आध्यात्मिक दृष्टिकोण, सांस्कृतिक चेतना, धार्मिकता, सजीव सत्यों का संकलन, सहनषक्ति, सामाजिक चेतना, की विद्यमानता रही है, परन्तु भारतीय जीवन किसी अनन्त शक्ति की खोज में होम दिया जाता है, अतः आध्यात्मिकता प्रमुख रूप से स्थापित रही है।

साहित्य के माध्यम से संस्कृति की अभिव्यक्ति सर्वप्रथम वाल्मीकि रामायण में हुई है। यह आर्य–सांस्कृति की विजय–गाथा है। रामायण की संस्कृति ही भारतीय संस्कृति के रूप में प्रतिस्थापित हुई। वाल्मीकिकृत रामायण के पष्चात पालि, प्राकृत एवं अपभ्रंष में रामकथाओं का प्रणयन हुआ, तदनन्तर तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' की रचना कर जन–जन का कण्ठहार बना दिया । भक्तिकाल की एक धारा 'रामकाव्य' को समर्पित है। आधुनिक काल में रामकाव्य पर अनेक ग्रंथ विविध रूपों में प्रस्तुत हुए हैं। प्रमुख प्रबंधात्मक कृतियाँ हैं–साकेत, प्रदक्षिणा, पंचवटी, लीला (मैथिलीशरण गुप्त),राम की शक्तिपूजा (निराला), वैदेही वनवास (हीरऔध), विदेह (रामावतार पोद्दार), संषय की एक रात, प्रवाद पर्व, शबरी (नरेष मेहता), शंबूक (डॉ. जगदीष गुप्त), अग्निपरीक्षा (आचार्य तुलसी), उर्मिला (बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'), मांडवी (हरिषंकर सिन्हा),जय हनुमान (श्यामनारायण पाण्डे), कैकेयी (केदारनाथ मिश्र 'प्रभात'), शबरी (बचनेष), साकेत संत (बलदेव प्रसाद मिश्र) सहित शताधिक प्रबंध रचनाएँ बीसवीं सदी में प्रकाषित हुई हैं।

आधुनिक हिन्दी रामकाव्य में रामकथा को दुहराना उद्देष्य नहीं रहा, बल्कि राम के माध्यम से आज के विघटित मूल्यों का परिष्करण कर भारतीय आदर्षों की प्रतिष्ठा की गई है। इस धारा में वर्ममान सामाजिक विषमता, आर्थिक शोषण, अछूतोद्धार, नारी जागरण, साम्राज्यवाद के प्रति आक्रोष, लोकतंत्र में आदर्ष राज्य व्यवस्था पारिवारिक आदर्ष, मानवतावादी दृष्टि का विस्तार, कर्म को महत्त्व, राष्ट्रीयता का प्रसार, अभिव्यक्ति में संतुलित दृष्टि जैसे नवीन मूल्यों पर सम्यक् विवेचन हुआ है।

वस्तुतः 'राम' भारतीय संस्कृति के चरम मूल्य हैं। रामकाव्य में वह शक्ति है कि आज के घोर निराषावादी एवं अनास्थावादी वातावरण में भारत अपना सांस्कृतिक संदेष सुना सकता है। यह कथा मूल्यों की पुनर्स्थापना करने के साथ ही युगीन प्रष्नों का उत्तर देने में सक्षम है। आधुनिक हिन्दी रामकाव्य धारा में प्रणीत काव्य–ग्रंथ भारत के सांस्कृतिक मूल्यों का परिष्करण कर हस्तान्तरित करने में भी सफल हुए हैं। इनमें युगानुकूल जीवन के प्रतिमानों, मूल्यों को वहन करने की शक्ति है। उक्त काव्य परम्परा का अनुसरण मात्र नहीं, बल्कि परिवेष को दृष्टि देने का सफल प्रयास है।

———

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

'संस्कृति' शब्द संस्कृत भाषा के 'सम्' उपसर्ग और 'कृ' धातु से बना है। 'कृ' का अर्थ है– करना, कृत का अर्थ हुआ– किया हुआ तथा 'कृति' उसकी भाववाचक संज्ञा है। अतः सम्कृति में सम्यक् रूप से या भली–भाँति समझा जाकर 'संस्कृति' शब्द का आषय है– सम्यक् रूप से किए गए कतिपय कार्यों का भाव रूप। वस्तुतः 'संस्कृति' षब्द का प्रयोग अत्यधिक व्यापक अर्थ में किया जाता है। संस्कृति अपने वृहद रूप में मानवता का मेरुदण्ड है। वह षिष्टता, सौजन्य तथा शील की आधारषिला है। किसी जाति की ज्ञानधारा किस दिषा में प्रवाहित हुई है, उसकी गुण–गरिमा में कौनसे स्थायी मूल्यवान तत्त्व हैं, उसकी भावना कितनी निर्मल और जनहित साधिका है, उसकी जीवनचर्या कितनी अहिंसामय है, वह सत्य के लिए कितनी लालायित है, एक शब्द में वह कितनी उन्नयनषील है अथवा अधोगामी, इससे उसके संस्कृत या असंस्कृत होने का परिज्ञान हो जायेगा।

भारतीय संस्कृति के मूलाधारों में आध्यात्मिक दृष्टिकोण, सांस्कृतिक चेतना, धार्मिकता, सजीव सत्यों का संकलन, सहनषक्ति, सामाजिक चेतना आदि है।[1] भारतीय संस्कृति के शाष्वत तत्त्व वस्तुतः मानवता के पोषक तत्त्व हैं। अद्वेषभाव, आत्मोपम्य दृष्टि, करुणा, मुदिता, मैत्री में तत्त्व हमें भारतीय संस्कृति की ओर ले जाते हैं, दूसरों के साथ उदारता से हम अपनी ही संस्कृति का पोषण करते हैं ।[2] भारतीय संस्कृति के मूल आधारों में आध्यात्मिक दृष्टिकोण, सांस्कृतिक चेतना, धार्मिकता, सजीव सत्यों का संकलन, सहनषक्ति, सामाजिक चेतना, की विद्यमानता रही है, परन्तु भारतीय जीवन किसी अनन्त शक्ति की खोज में होम दिया जाता है, अतः आध्यात्मिकता प्रमुख रूप से स्थापित रही है।

साहित्य के माध्यम से संस्कृति की अभिव्यक्ति सर्वप्रथम वाल्मीकि रामायण में हुई है। वाल्मीकि आदिकवि हैं। रामायण भारतीय संस्कृति की अन्यतम कृति हैं। यह आर्य सांस्कृति कहलाती है। इसकी उत्कृष्टता का प्रमाण है कि शताब्दियों पूर्व रचित यह ग्रन्थ आज भी सांस्कृतिक आदर्ष के रूप में प्रतिस्थापित हैं। वाल्मीकि कृत रामायण से आधुनिक हिन्दी साहित्य तक राम काव्य की सुदीर्घ परम्परा रही है। छान्दस वाङ्मय से निःसृत होने वाली रामकाव्य की धारा संस्कृत वाङ्मय को पार करती हुई प्राकृत वाङ्मय में प्रवेष करती है। 'बौद्धत्रिपिटक' में तथा 'जातकों' में रामकथा का दिग्दर्षन होता है। जैन परम्परा में 'विमलसूरी' का 'पउमचरियं', 'षीलांक' का 'महापुरिसचरियं', आचार्य 'भद्रेष्वरसूरी' की 'कुहावली', 'सीय चरियं', 'स्वयंभू' कृत 'पउमचरिउ', 'पुष्पदंत' रचित 'महापुराण', 'रहल्ल' का 'पद्मपुराण' रामकाव्य की परम्परा को विकसित करते हैं।

हिन्दी रामकाव्य परम्परा में तुलसीदास से पूर्व यत्र–तत्र रामकथा से संबंधित अंष मिलते हैं। यहाँ तक की निर्गुण संत काव्य में भी 'राम' का नाम चर्चित है। तुलसीदास के युग तक भारतीय संस्कृति विदेषी अक्रमणों से छिन्न–भिन्न हो गई थी। तुलसी ने भारतीय संस्कृति के आदर्षों की पुनर्प्रतिष्ठा की । 'रामचरितमानस' में समाज के उत्तमोत्तम आदर्षन, नैतिक विधान, सामाजिक सुव्यवस्था, जीवन के उदात्त रूप आदि पर बल दिया गया। आदर्ष पुरुष, आदर्ष परिवार, आदर्ष समाज, आदर्ष राज्य एवं आदर्ष युग की प्रतिष्ठा का प्रयास इसमें हुआ है।

रीतिकालीन रामकाव्य में केषवदास की 'रामचंद्रिका' के अतिरिक्त सेनापति रचित 'कवित्त रत्नाकर', लालदास की 'अवध विलास', 'रामचन्द्र लीला–चरित', 'मंडन–जनकपचीसी', सुखदेव मिश्र कृत', 'दषरथराय' सहित अनेक कृतियाँ उपलब्ध हैं, जिनमें रामकथा से संबंधित अंषों के माध्यम से भारतीय संस्कृतिक मूल्यों के प्रतिस्थापन का प्रयास हुआ है। आधुनिक हिन्दी रामकाव्य में खड़ी बोली की

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

रामकाव्य पर प्रथम कविता भारतेन्दु रचित 'दषरथ विलाप'[3] उपलब्ध होती है। रामकाव्य से संबंधित आधुनिक कला की प्रमुख प्रबंधात्मक कृतियाँ इस प्रकार हैं–

नाम कृति	रचनाकार	रचनाकाल
रामचरित चंद्रिका	पं. रामचरित उपाध्याय	1919 ई.
लीला	मैथिलीशरण गुप्त	1919 ई.
चित्रकूट (कानन कुसुम)	जयषंकर प्रसाद	1919 ई.
सीता परित्याग	श्रीरामस्वरूप टंडन	1919 ई.
सुलोचना सती	श्री विष्णु	1923 ई.
पंचवटी प्रसंग (अनामिका)	सुर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	1923 ई.
रामचन्द्रोदय	रामनाथ 'जोतिसी'	1924 ई
श्री सीताराम चरितायन	श्री शीतल सिंह गहटवार	1925 ई.
पंचवटी	मैथिलीशरण गुप्त	1925 ई.
मेघनाद वध	माइकेल मधुसूदन दत्त	1926 ई.
साकेत	मैथिलीशरण गुप्त	1929 ई.
प्रदक्षिणा	मैथिलीशरण गुप्त	1929 ई.
भरत भक्ति	षिवरतन शुक्ल 'सिरस'	1932 ई.
कौषल किषोर	पं. बलदेव प्रसाद मिश्र	1934 ई.
कौषलेन्द्र कौतुक	बिहारी लाल विष्वकर्मा	1936 ई.
उर्मिला	विषाल	1936 ई.
शबरी	बचनेष	1936 ई.
राम की शक्तिपूजा	सुर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	1937 ई.
वैदेही वनवास	अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हीरऔध'	1938 ई.
तुलसीदास	सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	1938 ई.
कैकेयी	शेषमणि शर्मा 'मणि रायपुरी'	1942 ई.
साकेत संत	पं. बलदेव प्रसाद मिश्र	1946 ई.
लक्ष्मण (स्वर्ण–किरण)	सुमित्रानंदन पंत	1946 ई.
अषोकवन (स्वर्ण–किरण)	सुमित्रानंदन पंत	1947 ई.
रामकथा कल्पलता	नित्यानंद शास्त्री 'दधीचि'	1948 ई.
कैकेयी	केदारनाथ मिश्र 'प्रभात''	1950 ई.
श्रीराम तिलकोत्सव	षिवरत्न शुक्ल 'सिरस'	1950 ई.
कल्याणी कैकेयी	राधेष्याम द्विवेदी	1950 ई.
अषोकवन	गोकुल शर्मा	1951 ई.
सती सीता	शकुन्तला कुमारी 'रेणु'	1951 ई.
रावण महाकाव्य	हरदयाल सिंह	1952 ई.
विदेह	रामावतार पोद्दार	1954 ई.
दषानन	कैलाष तिवारी 'विद्रोह'	1955 ई.
आंजनेय	जयषंकर त्रिपाठी	1956 ई.
उर्मिला	बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'	1957 ई.
मांडवी	हरिषंकर सिन्हा	1958 ई.
सीता	चन्द्रप्रकाष वर्मा	1958 ई.
भूमिजा	रघुवीर शरण 'मित्र'	1958 ई.
रामराज्य	पं. बलदेव प्रसाद मिश्र	1959 ई.
शबरी	माया देवी शर्मा	1960 ई.
सीतान्वेषण	सरयूप्रसाद त्रिपाठी	1961 ई.
अग्निपरीक्षा	आचार्य तुलसी	1961 ई.

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

नन्दिग्राम	गयाप्रसाद द्विवेदी	1963 ई.
सियविजन वनवास	रामकिशोर अग्रवाल 'मनोज'	1967 ई.
पुरुषोत्तम राम	सुमित्रानंदन पंत	1967 ई.
संषय की एक रात	नरेष मेहता	1968 ई.
श्री रामायण दर्षनम् (अनुवाद)	डॉ. सरोजनी महिषी	1968 ई.
कैकेई	चाँदमल अग्रवाल	1969 ई.
जय हनुमान	श्यामनारायण पाण्डे	1969 ई.
जातकी जीवन	राजाराम शुक्ल 'राष्ट्रीय आत्मा'	1971 ई.
उत्तरायण	डॉ. रामकुमार वर्मा	1971 ई.
अरुण रामायण	रामावतार पोद्दार ' अरुण'	1973 ई.
भरत	राजेन्द्र शर्मा	1976 ई.
शबरी	नरेष मेहता	1976 ई.
प्रवाद पर्व	नरेष मेहता	1977 ई.
शंबूक	डॉ. जगदीष गुप्त	———

इसके अतिरिक्त विभिन्न भारतीय भाषाओं में भी रामकाव्य की रचना हुई और भारतीय सांस्कृतिक जीवन मूल्यों को भी विद्यमान रखा है।

जीवन मूल्यों का संबंध केवल सभ्यता से नहीं, वरन संस्कृति से होता है। अपनी विरासत के लिए जो उदात्ततम प्रदेष है, वही मूल्य है। भारतीय समाज का विकास मूल्यों का विकास ही है। इन्हीं मूल्यों के कारण भारतीय संस्कृति को सर्वश्रेष्ठ माना जा रहा । भारतीय संस्कृति के चरम मूल्य 'राम' हैं। राम में भारतीय संस्कृति की समस्त विषेषताएँ आकर एकत्र हो गई हैं। आधुनिक हिन्दी रामकाव्य में रामकथा को दुहराना उद्देष्य नहीं रहा, बल्कि राम के माध्यम से आज के विघटित मूल्यों की संक्रांति के अवसर पर भारतीय परम्परित मूल्यों की रक्षा करना एवं युगीन चुनौतियों का सामना करना रहा है।

आधुनिक हिन्दी रामकाव्य में राम के माध्यम से ही आज की सामाजिक विषमता , आर्थिक शोषण, अछूतोद्धार, नारी जागरण व साम्राज्यवादी भवना के प्रति आक्रोष प्रकट हुआ है। आधुनिक रामकाव्य में राम का स्वप्न आदर्षराज्य है। उनकी आदर्ष कल्पना में सर्वत्र समता का ही राज्य है। राम का चरित्र शोषण–विरोधी रूप में प्रकट हुआ है यथा–

मैं अग्नि पुरुष शोषण को स्वयं मिटाऊँगा
नृप अनाचार को मैं समाप्त कर पाऊँगा।
भू से कुरीतियाँ मिटें यही मैं चाह रहा
मेरी वाणी ने शोषक को क्या–क्या न कहा। [4]

वर्तमान युग प्रजातंत्रीय युग है । आधुनिक रामकाव्य धारा मे राम–रावण का युद्ध साम्राज्यवाद और प्रजातंत्र के मध्य का युद्ध है। राज्यसत्ता प्रजा की थाती है। शासक केवल लोकसेवक मात्र है। राज्य शासक की सम्पत्ति नहीं है। राम के राज्य में प्रजातंत्र शासित होता था। राम स्वयं सभी प्रकार के आत्मसंयम और आत्मपीड़ा को सहन करके लोकमत की रक्षा करते हैं। उनकी दृष्टि में राजा द्वारा प्रजा का भाग्य निर्माण होता है। राज्य पर जनता के अधिकारों का समर्थन करती उक्त पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं–

है स्वायत्त स्वत्व जनता का, राजा का अधिकार नहीं,
शक्ति देष की एक प्रजा है, तोप तीर तलवार नहीं।

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

वह जिसको निर्णीत करेगी, वही देष का शासक होगा
उसकी इच्छा के विरुद्ध, कुछ भी नहीं भरसक होगा।[5]

राम द्वारा प्रजातांत्रिक मूल्यों की स्थापना का निरन्तर प्रयास हुआ। लक्ष्मण का उक्त कथन प्रमाण है–

बन्धु अग्रज हैं
परिजन और पुरजन प्रिय भाजन हैं,
साथ ही हम प्रजा के
मनोनीत राजन हैं।[6]

आज के इस पदार्थवादी युग में जब पारिवारिक मूल्य विघटित हो रहे हों, कौटुम्बिक आदर्ष विरासत में रह गये हों और व्यष्टिवादिता हमारे जीवन का अंग बन चुकी हों, तब इस काव्य धारा में राम पारिवारिक मर्यादाओं की स्थापना के पक्षपाती नजर आते हैं। राम और भरत का अभेद कौषल्या के विषाल हृदय एवं उदात्तवृति का परिचायक हैं। यथा–

तू वही है, भिन्न केवल नाम
एक सहृदय और एक सुगात्र
एक सोने के बने दो पात्र ।[7]

पवित्र हिन्दू संस्कृति में अस्पृष्यता जैसा कलंक मध्यकाल में लगा। आरंभिक वैदिक संस्कृति में सवर्ण–अवर्ण की कोई भावना नहीं थी। सभी प्राणी समान हैं, यह मानवतावादी दृष्टि आज के समय की आवष्यकता है। आधुनिक रामकाव्य धारा में मानव को सर्वोपरि स्थान दिया गया । मानव का तिरस्कार कर की गई आराधना व्यर्थ है। राम ने अछूत भावना को समाप्त करने का प्रयास किया। बचनेष ने 'षबरी' के माध्यम से अछूत की दयनीय स्थिति व ऋषि–मुनियों का आडम्बरपूर्ण चित्र खींचा, किन्तु राम द्वारा शबरी का स्वागत नया संकेत था। कवि का कथन है–

निज जाति पवित्रता के मद में,
मुनि लोगन की मति मारी गई।
जहँ राम रँगीली भई शबरी,
तहँ स्वानिनि से दुत्कारी गई।[8]

आधुनिक हिन्दी रामकाव्य धारा में नारी को एक नवीन औदार्यपरक दृष्टि प्रदान की। नारी अब हाड़–माँस की पुतली और भोग्या मात्र न रह कर अपने कर्तव्य के प्रति सचेष्ट है। कैकेयी, सीता, उर्मिला, माण्डवी, अहल्या आदि नारीपात्रों के माध्यम से इस दृष्टिकोण का पर्याप्त विवेचन इस काव्य धारा में हुआ है। नारी जागरण के फलस्वरूप अब नारी युग की सजग चेतना बनकर उपस्थित हुई है–

मैं न राम को माँग रही हूँ, माँग रही है जिसकी वाणी,
वह है युग की सजग चेतना , महाषक्ति युग की कल्याणी।[9]

साथ ही कवियों ने नारियों को अपने बल नर क्रांति करने का आह्वान भी किया । उसे कृत्रिम आवरणों को तोड़ने, भय से मुक्त होने, सन्तुलन न खोने और सत्य क्रांति का स्वर दिया–

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

अपने बल पर नारी! तुझे जागना होगा,
कृत्रिम आवरणों को ,तुझे त्यागना होगा।
खो संतुलन भीत हो नहीं, भागना होगा,
सत्य क्रांति का अभिनव, अस्त्र दागना होगा।[10]

आज का मानव भाग्यवादी नहीं रह सकता, उसे अपने पुरुषार्थ के माध्यम से ही सर्वस्व प्राप्त करना होगा। यदि कर्म नही तो प्राणों का अस्तित्व ही नहीं। कर्म के अभाव में जगत का कल्याण भी असंभव है। निरन्तर प्रगति के पथ का वरण आज के मनुष्य का लक्ष्य रहना चाहिए। राम–काव्य यह प्रेरणा देता है कि मानव के कार्य में यदि सिन्धु बाधा बन कर आएगा तो उसे भी सोख लिया जाएगा–

लंका यदि ध्रुव पर भी होती तो
भाग नहीं पाती बन्धु
लक्ष्मण के पौरुष से
कर्म की चुनौती
मुझे स्वीकार है।[11]

समस्त विष्व के साथ मित्र भाव से रहना ही विष्वमैत्री है। वर्तमान संदर्भ में राष्ट्रीयता केवल अपने देष तक सीमित नहीं है। जिस प्रकार वैदिक काल में 'भूमा भाव' था तथा वसुधा को ही कुटुम्ब मानने की भावना मिलती है, वही भावना आधुनिक हिन्दी रामकाव्य में भी मिलती है। इसमें राम अपनी स्नेह भावना को संपूर्ण विष्व के लिए प्रकट करते हैं, निदर्षन द्रष्टव्य है–

क्या जन्मभूमि मेरी पुनीत,
बस लंका तक ही है समाप्त
या भूतल में सर्वत्र व्याप्त।[12]

राम ने अपने राज्य में सभी को समान दृष्टि से देखा तथा सभी को समान अधिकार देने का शंखनाद किया। सभी को समता की पृष्ठभूमि प्रदान की। इस काव्य धारा में यह भाव प्रकट हुआ है कि समता का सूर्योदय राम भक्ति से ही संभाव्य है। यह शक्ति ही समता की चेतना जन मन में नवीन गति भर सकती है। पृथ्वी नर समता का प्रकाष ही रामराज्य कहलाता है। राम ने देषनीति में समता को महत्त्वपूर्ण स्थान देते हुए कहा –

''मैं हूँ मनुष्य
राजमहल सचमुच सबका
वैभव के गिरि भी मेरे नहीं सभी के हैं।''[13]

आधुनिक हिन्दी रामकाव्य ने उस वर्ण–व्यवस्था का विरोध किया है, जो कर्म पर आधारित न होकर जाति पर आधारित हो। व्यक्ति का महत्त्व होना उसके युग–कर्म पर निर्भर करता है। आज का रामराज्य समान दृष्टि वाला समाज है। 'षबरी', 'षंबूक' जैसे पात्रों को लेकर लिखी जाने वाली रचनाएँ वर्ण–व्यवस्था की परम्परित रूढ़िबद्ध विचारधारा के प्रति आक्रोष को प्रकट करती है और नये मूल्य प्रतिस्थापित करती है, यथा–

जो व्यवस्था व्यक्ति के सत्कर्म को भी / मान ले अपराध /
जो व्यवस्था फूल को खिलने न दे, निर्बाध /
जो व्यवस्था वर्ग सीमित स्वार्थ से हो ग्रस्त।

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

वह विषम/ घातक व्यवस्था/ शीघ्र ही हो / अस्त''।[14]

त्रेतायुग के रामराज्य की व्यवस्था ही आदर्ष शासन व्यवस्था है, जो वर्तमान का पथ प्रदर्षन करने में सक्षम है। आदर्ष शासन में न्यायतंत्र, दण्ड व्यवस्था, प्रजा के अधिकार , कर्तव्य आदि पर संतुलित दृष्टि अपनाई जाती है। आदर्ष शासन में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता होती है, किन्तु इस स्वतंत्रता का दुरुपयोग नहीं होना चाहिए–

अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य का अर्थ / यह नहीं होता कि/
हम व्यक्तिगत राग–द्वेषों / आधारहीन अभिमतों /
वक्तव्यों और शंकाओं को / सार्वजनिक रूप से /
आक्षेपात्मक वाणी दें।''[15]

आधुनिक हिन्दी रामकाव्य ने स्वतंत्रता–संग्राम राष्ट्रीय भावना घोष किया। राष्ट्रीयता का यह रूप आधुनिक है। इनमें चेतना की व्याप्ति है। मातृभूमि वंदना, उसका देवीकरण, भाषा, संस्कृति के प्रति प्रेम, स्वदेष की भावना विभिन्न रूपों में अभिव्यक्त हुई। रामकाव्य में मातृभूमि के प्रति सम्मान की भावना यत्र–तत्र अभिव्यक्त हुई । रावण का कथन–

वानर से डरने वालों को, लंका जगह न दे सकेगी
उनके निष्फल जीवन का, बोझ न शीष पर ले सकेगी।''[16]

युद्ध और शान्ति की समस्या इस युग की देन है। आज का कवि युद्ध को एक विवषता मानता है। बिना सोचे हुए कारणों, सामाजिक दबावों, यथार्थ के दुराग्रहों तथा काल्पनिक इच्छाओं के सम्मुख न चाहते हुए भी मनुष्य को नतमस्तक होना पड़ता है, और अमानुषी कृत्य करने पड़ते हैं। साम्राज्यवाद की वृत्ति से जब लघु मानव त्रस्त होता है, तब युद्ध का आविर्भाव अनायास हो जाता है–

हम साधारण जन/युद्ध प्रिय थे कभी नहीं
और न लंका युद्ध लड़ेंगे/ युद्ध भाव से।
महाराज / साम्राज्य वृत्ति के द्वारा
हम साधारण जन / अर्ध सभ्य कर दिए गए।[17]

आधुनिक युग में रामकथा का प्रणयन क्यों हुआ ? इस पर डॉ. प्रमिला अवस्थी का अभिमत है–'' विचार पक्ष पर बढ़ने से ज्ञात होता है कि भारत अपनी सांस्कृतिक हार स्वीकार कर जब पाष्चात्य की ओर बढ़ रहा था, उसे अपनी संस्कृति, ज्ञान –विज्ञान और शक्ति का भरोसा न रहा था, तब रामकाव्य प्रणेताओं ने रामकथा की शक्तिमत्ता देखकर यह अनुभव किया की आधुनिक घोर वैज्ञानिक अनास्था के युग में भी रामकथा के माध्यम से भारत अपना सांस्कृतिक संदेष सुना सकता है''।[18] वस्तुतः रामकाव्य भारतीय संस्कृति के मूल्यों की पुनर्स्थापना की एक मात्र कथा है, जो युगीन प्रष्नों का उत्तर देने में सक्षम है।

समग्रतः आधुनिक हिन्दी रामकथा धारा ने संस्कृति के तत्त्वों को नवीन आलोक में देखा है। सामाजिक कुरीतियों का खंडन, सामाजिक समानता का पोषण, पारिवारिक आदर्षों की प्रतिस्थापना, नारी की प्रतिष्ठा, आर्थिक समानता, श्रम का महत्त्व आदि परम्परित मूल्यों को नवीन परिप्रेक्ष्य में प्रतिस्थापित किया गया । साथ ही शोषण की निंदा, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, राष्ट्रप्रेम, पाष्चात्य भोगवादी , साम्राज्यवादी नीति की निंदा, अधिकार चेतना जैसे नवीन मूल्यों की भी प्रतिष्ठा की गई है। मानवता के

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

चरम विकास में इस काव्य का अमूल्य योगदान रहा है। आधुनिक रामकाव्य परम्परा की अनुभूति नहीं है, उसमें नवीन युगानुकूल जीवन के प्रतिमानों, मूल्यों को वहन करने की शक्ति भी है।

संदर्भ–

1. गुलाब, बाबू–भारतीय सांस्कृति की रूपरेखा, पृ. 26, ज्ञान गंगा प्रकाषन, नई दिल्ली, 2008 ई.
2. गाँधी, मो. क. – हिन्दी स्वराज, पृ. 62, प्रभात प्रकाषन, नई दिल्ली, 2010 ई.
3. हरिषचंद्र भारतेन्दु – भारतेन्दु ग्रंथावली, पृ. 1, सं. मिथिलेष पांडेय, नमन, प्रकाषन, नई दिल्ली, 2008 ई.
4. रामावतार, पोद्दार अरुण– अरुण रामावतार, पृ. 73, उद्धृत डॉ. प्रमिला अवस्थी कृत हिन्दी रामकाव्यः नये संदर्भ , पृ. 263 चिन्तन प्रकाषन, कानपुर, 1993 ई.
5. शर्मा, 'मणिरायपुरी' शेषमणि –कैकेयी, पृ. 44, उद्धृत वही, पृ. 264
6. मेहता, नरेष –संषय की एक रात, पृ. 11, हिन्दी ग्रंथ रत्नाकार, बम्बई, 1962 ई.
7. गुप्त, मैथिलीषरण – साकेत, पृ.144, लोक भारती प्रकाषन, इलाहबाद 2008 ई.
8. बचनेष –षबरी, पृ.8 उद्धृत डॉ. राम कुमार सिंह कृत विचार–विमर्ष, सारंग प्रकाषन, सारंग बिहार, 2005 ई.
9. मिश्र 'प्रभात' केदारनाथ – कैकेयी, पृ.121 उद्धृत कविता कोष वेब पेज से 1
10. तुलसी आचार्य – अग्नि परीक्षा , पृ. 68, आर्दष साहित्य संघ, चूरू, 1985 ई.
11. मेहता, नरेष – संषय की एक रात, पृ. 15, हिन्दी ग्रंथ रत्नाकार, बम्बई, 1962 ई.
12. गुप्त, मैथिलीशरण – लीला, पृ. 40, उद्धृत डॉ. प्रमिला अवस्थी कृत हिन्दी रामकाव्यः नये संदर्भ , पृ. 272 चिन्तन प्रकाषन, कानपुर, 1993 ई.
13. रामावतार पोद्दार अरुण – विदेह, पृ. 198 उद्धृत वही, पृ. 273
14. गुप्त, डॉ. जगदीष – शम्बूक , पृ. 45, राजकमल प्रकाषन, नई दिल्ली, 2013 ई.
15. मेहता नरेष – प्रवाद पर्व, पृ. 30, हिन्दी बुक सेंटर, नई दिल्ली, 2012 ई.
16. पाण्डे, श्यामनारायण – जय हनुमान, पृ. 39, उद्धृत डॉ. प्रमिला अवस्थी कृत हिन्दी रामकाव्यः नये संदर्भ , पृ. 185, चिन्तन प्रकाषन, कानपुर, 1993 ई.
17. नरेश, मेहता – संषय की एक रात, पृ. 65 हिन्दी ग्रंथ रत्नाकार, बम्बई, 1962 ई.
18. अवस्थी, डॉ. प्रमिला – हिन्दी रामकाव्यः नये संदर्भ , पृ. 289, पृ. 263 चिन्तन प्रकाषन, कानपुर, 1993 ई.

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)